हेगेल

प्रमुख रचना -
Phenomenology of spirit
Science of Logic

✓ * हेगेल कांट के व्यवहार और प्रत्यय (Phenomena and Noumena) को स्वीकार नहीं करता है।

* कांट के इन्द्रियानुभव संवेदना और बुद्धि-विकल्प के द्वैत को भी नहीं माना है।
* कांट के 'अज्ञेय' को भी हेगेल नहीं मानते; हेगेल के अनुसार अज्ञेय कुछ भी नहीं है।

* हेगेल के अनुसार ~~तत्व~~ तर्कशास्त्र (Logic) और तत्त्वशास्त्र (Metaphysics) दोनों एक ही है।

* परम तत्व निरपेक्ष विज्ञानरूप या शुद्ध-चैतन्यरूप है। विज्ञान एकमात्र सत्ता है। जिसे हम बाह्य जगत कहते हैं, वह भी विज्ञान का ही परिणाम है।
* विज्ञान ही मूर्त और वास्तविक (Concrete and Real) है।

* निरपेक्ष सत्ता (Absolute Idea) ही एक मात्र सत् है और सम्पूर्ण विश्व इसी का परिणाम है।

✓ हेगेल की प्रसिद्ध उक्ति -
"जो चित् है वही सत् है और जो सत् है वही चित् है अथवा बोध ही सत्ता है और सत्ता ही बोध है।"
(Real is rational and rational is real)

* हेगेल - विशिष्टाद्वैत के मत के समान है।

✓ * हेगेल के अनुसार निषेध (Negation)/(contradiction) "अखिल विश्व का प्राण" है।

द्वन्द्वात्मक प्रणाली

- हेगेल के अनुसार विचार का विकास क्रम त्रिक में होता है। ये तीन चरण हैं —

पक्ष (Thesis)
प्रतिपक्ष (Antithesis)
समन्वय (Synthesis) } इन त्रिक को द्वन्द्वात्मक तर्क कहते हैं।

Negation is determination — Hegel
Determination is negation — Spinoza
Negation of negation — Marx

- सत्, असत् तथा परिवर्तन

हेगेल की प्रसिद्ध उक्ति है : शुद्ध सत् शुद्ध असत् है। शुद्ध सत् में कोई भेद नहीं
इसलिए शुद्ध सत् और शुद्ध असत् में
क्योंकि दोनों निर्विशेष हैं।
I. अस्ति / सत्ता (Being) तो पक्ष है
II. नास्ति / असत्ता (Non-Being) प्रतिपक्ष है (नि...)
दोनों अभाव है दोनों का विरोध समाप्ति के लिए
समन्वय आवश्यक है
III. समन्वय परिणति (Becoming) है।

आत्मा की व्याख्या

→ हेगेल के अनुसार आत्म निरपेक्ष समन्वय है पर मानव व्यक्त है।
समन्वय का क्रम पक्ष, प्रतिपक्ष के समन्वय की व्याख्या तक जाता है।